International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 343-346

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 343-346
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-03-2022
Accepted: 21-04-2022

मनीष कुमार
शोधच्छात्र, संस्कृत-विभाग,
दिल्लीविश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
मनीष कुमार
शोधच्छात्र, संस्कृत-विभाग,
दिल्लीविश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

प्रमुख ऋग्वैदिक संवाद-सूक्तों मे पर्यावरण विषयक संचेतना

मनीष कुमार

प्रस्तावना

यत् परितः आवृणोति आच्छादयति तत् पर्यावरणम्।

अर्थात् जो हमारे चारों ओर आवृत है, जैसे वायुमण्डल, जलमण्डल और भूमिमण्डल इनसे हम आच्छादित हैं, घिरे हैं, इसीलिए पर्यावरण शब्द से मिट्टी, जल, वायु, प्रकाश और आकाश ग्रहण होते हैं। और जो इनको दूषित करता है, वह पर्यावरण प्रदूषक कहलाते हैं।

ऋग्वैदिक संवाद-सूक्तों में एक ओर जैसे- पुरूरवा-उर्वशी सूक्त, इसमें पुरूरवा मेघ और उर्वशी विद्युत रूप में कल्पित हैं इन्हीं के मेल से वृष्टि और वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है।

ऋग्वेद (१०/९५/७) में कहा है कि जब वह पुरूरवा (मेघ) उत्पन्न हुआ तब 'गनाः' अर्थात् 'आपः' (जल) उसके पास था।

निरुक्त (१०/४६) में 'गनाः' का अर्थ 'गमनाद् आपः' किया है। शतपथ ब्राह्मण में - ' पुरूरवा और उर्वशी से आयु उत्पन्न हुआ'। उसी ब्राह्मण (१/२/३/१६) में "आयु" को अन्न कहा है- 'अन्नम् उ वा आयुः', जो की प्राणी मात्र के जीवन धारण के लिए अत्यावश्यक हैं। तो दूसरी और यम-यमी सूक्त, इसमें यम-यमी दिन और रात्रि रूप में कल्पित हैं तथा इनका मिलन तीनों कालों में असंभव बताते हुए भाई और बहन के अनैतिक सम्बन्ध को अनुचित बताया गया है। पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्। (ऋग्वेद १०/१०/१२)

एक ओर विश्वामित्र-नदी सूक्त है, जिसमें नदियों से प्रार्थना की है कि वे हमारे पार होने लायक निम्न होकर बहे। विश्वामित्र पार होने के लिए उनकी अनेक स्तुतियाँ करते हैं और माता कहकर सम्बोधित करते हैं - "अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं" स्पष्ट है कि नदियाँ भी माता के सामान मनुष्यों का पालन करती है, कृषि को जल देकर एवं उसका जल निर्मल होता है, पीने योग्य होता है, समुद्र में मिलने से पूर्व।

इन सूक्तों में मानव के लिए आवश्यक और अनावश्यक अर्थात विधि और निषेध, प्रकृति के द्वारा मानव कल्याण के विषयों को बतलाना और प्राकृतिक संचेतना का प्रथम प्रयास है।

वेद में प्रकृति देवता स्वरूप हैं, क्योंकि वह देती है जीने के लिए हवा, पीने के लिए जल, अन्धकार नाश के लिए प्रकाश। देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा।

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा इस प्रकार है -

क) वेद का परिचय,
ख) ऋग्वेद का स्वरूप,
ग) संवाद-सूक्तों का महत्त्व,
घ) प्रमुख ऋग्वैदिक संवाद सूक्तों में पर्यावरण विषयक संचेतना।

क) वेद का परिचय:

वेद शब्द 'विद् ' धातु से ' घञ् 'प्रत्यय होकर बनता है, जिसका अर्थ ' ज्ञान' होता है।

सिद्धान्तकौमुदी में 'विद्' धातु का पाठ चार अर्थों में किया गया है। [1]

स्वामी दयानन्द का कहना है कि जिससे सभी मनुष्य सत्यविद्या जानते हैं, प्राप्त करते हैं, विचार करते हैं, और विद्वान होते हैं, अथवा सत्यविद्या की प्राप्ति के लिए जिसमें प्रवृत्त होते हैं, वे 'वेद' कहलाते हैं । [2]

आपस्तम्ब में इस शब्द का प्रयोग 'ज्ञान' के अतिरिक्त एक और अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, जिसके अनुसार मंत्र और ब्राह्मण भाग को 'वेद' कहा जाता था। [3] वेदार्थ ज्ञान के लिए यास्काचार्य ने सर्वोत्कृष्ट निरुक्त शास्त्र की रचना की।

आचार्य यास्का वेद को अपौरुषेय मानते हैं। [4] मनु ने 'वेद' को सब धर्मों का मूल कहा है। [5] तथा आचार्य सायण वेद को इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहारक मानते हैं। [6] यही कारण है कि पतञ्जलि षडङ्ग वेदाध्ययन पर आदिक बल देते हैं । [7] वेदों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति एवं भारतीयों के जीवन दर्शन को समझना बड़ा कठिन हैं। पुरुष सूक्त के अनुसार तीन ही वेदों के नाम मिलते हैं - ऋक्, यजुः और साम, जिससे ज्ञात होता है कि वेद तीन ही हैं। [8]

यजुर्वेद के भाष्यकार महीधर का कथन है कि ब्रह्मा से चली आ रही वेद परम्परा को ग्रहण करके वेदव्यास ने मंदमति मनुष्य के लिए वेद को ऋक्, यजुः, साम. और अथर्व. के रूप में विभाजित कर क्रमशः पैल, वैशम्पायन, जैमिनी और सुमन्तु को उपदेश दिया। [9]

इस प्रकार का पृथक्करण करने के कारण व्यास को वेदव्यास कहा जाता है। [10]

ख) ऋग्वेद का स्वरूप:

ऋग्वेद विश्वसाहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। क्योंकि इसके मंत्र प्रत्येक संहिताओं में उपलब्ध हैं। छन्दों एवं चरणों से युक्त मंत्रों को 'ऋक्' कहते हैं। और ऋचाओं के संग्रह का नाम ऋक्संहिता है। इनमें भारतीय-संस्कृति, धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास एवं काव्य की विविध सामग्री उपलब्ध हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ हैं।[11] भर्तृहरि पंद्रह और भगवतदत्त सताइस शाखाओं का उल्लेख करते हैं l

शौनक के 'चरणव्यूह' नामक परिशिष्ट ग्रन्थ के अनुसार ऋग्वेद की केवल पांच शाखाएँ मुख्य हैं- अ) शाकल, ब) वाष्कल, स) आश्वलायन, द) शांखायन और इ) माण्डूकायन l

किन्तु इनमें 'शाकल शाखा' ही पूर्ण उपलब्ध है, 'वाष्कल शाखा' अपूर्ण है और शेष शाखाएँ अनुपलब्ध हैं। शाकल शाखा के प्रवर्तक शाकल ऋषि हैं।

ऋग्वेद के दो प्रकार के विभाजन उपलब्ध हैं- अष्टकक्रम और मंडलक्रम।

अष्टकक्रम के अनुसार समस्त ग्रन्थ आठ अष्टकों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अष्टक में आठ अध्याय हैं। इस प्रकार पूरे ग्रन्थ में चौसठ अध्याय हैं।

मण्डलक्रम के अनुसार समग्र ग्रन्थ दस मंडलों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक मंडल में अनुवाक हैं, और प्रत्येक अनुवाक में कई सूक्त हैं तथा प्रत्येक सूक्त में कई मंत्र हैं। दस मंडलों में कुल पचासी अनुवाक हैं l

शौनक की ' अनुक्रमणी' के अनुसार ऋग्वेद में समस्त मंत्रों (ऋचाओं) की संख्या १०,५८० हैं। [12]

मण्डलक्रम में २ से ७ वें मण्डल तक विभिन्न ऋषियों एवं उनके वंशजों द्वारा रचित है। अतः इन्हें वंश मण्डल कहते हैं।

एवं सामवेद की कौथुमशाखा में केवल ७५ मंत्रों को छोड़कर शेष सारे मंत्र शाकल शाखा के ही हैं।

अथर्ववेद की शौनक संहिता में शाकल शाखा के १,२०० मंत्र पाए जाते हैं l

कृष्णयजुर्वेद की तैत्तरीयशाखा और शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयसंहिता में शाकलशाखा के बहुत से मंत्र पाए जाते हैं l

इसीलिए ऋग्वेद का अन्य वेदों की अपेक्षा सर्वाधिक महत्त्व है l

वर्ण-विषय के आधार पर ऋग्वेद के सूक्तों को विद्वानों ने तीन वर्गों में विभक्त किया है-

अ) धार्मिक सूक्त,

ब) दार्शनिक सूक्त,

स) लौकिक सूक्त l [13]

अ) धार्मिक सूक्त: धार्मिक सूक्त का अर्थ देवताओं की स्तुति करने वाले सूक्तों के रूप में हैं। इन सूक्तों में तीन प्रकार की ऋचाएँ मिलती हैं - परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत और आध्यात्मिक। [14]

ब) दार्शनिक सूक्त: दार्शनिक सूक्तों में पुरुष-सूक्त, हिरण्यगर्भ-सूक्त, वाक्-सूक्त, नासदीय-सूक्त आदि मिलते हैं l

स) लौकिक सूक्त: लौकिक सूक्तों में औषधि विज्ञान, राजशास्त्र, विवाह, दानस्तुति, अक्ष-सूक्त और संवाद-सूक्त प्राप्त होते हैं l

ग) संवाद- सूक्तों का महत्त्व:

संवाद-सूक्त अर्थात वे सूक्त, जिनमें दो या दो से अधिक देवताओं ऋषियों या किन्हीं और के मध्य वार्तालाप की शैली में विषय को प्रस्तुत किया गया हो l

ऋग्वेद के लौकिक-सूक्तों में संवाद-सूक्तों का मुख्य स्थान हैं। इनमें कथनोपकथन का प्राधान्य है। [15] ऋग्वेद के संवाद-सूक्त 'आख्यान साहित्य' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं l

इसी आख्यान साहित्यों से वीरगाथात्मक काव्यों, नाटकों, पुराणों तथा कथासाहित्य का विकास हुआ है। [16]

संवाद सूक्तों की संख्या प्रायः २० हैं ।

i. Rv.1.125; Dialogue between a wandering priest and apious liberal prince.
ii. Rv.1.165: Dialogue between Inara and Maruts.
iii. Rv.1.170: Dialogue between Indra and Agastya.
iv. Rv. 1.179: Dialogue between Agastya and Lopamudra.
v. Rv.111.33; Dialogue between Visvamitra and the rivers.
vi. Rv.IV.18; Dialogue among Indra, Aditi and Vamadeva.
vii. Rv. IV. 42: Dialogue between Indra and Varuna.
viii. R v.V I I I.100; Dialogue among Agni, Nema Bhargava and Indra.
ix. Rv. X.10; Dialogue between Yam and Yami.
x. Rv. X.27; Dialogue between Indra and Vasukra.
xi. RV. X.28; Dialogue between Indra and Vasukra.
xii. Rv. X.51; Dialogue between Gods and Agni.
xiii. Rv. X.52; Dialogue between Gods and Agni Saucika.
xiv. Rv. X.53; Dialogue between Saucika Agni and Gods.
xv. Rv. X. 86; Dialogue between Indra, Indrani and Vrsakapi.
xvi. Rv. X.95; Dialogue between Pururva and Urvashi.
xvii. Rv. X.98: Dialogue among Devapi, Santanu and Brhaspati.
xviii. Rv. X.108; Dialogue between Sarma and Pani.
xix. Rv. X.124; Dialogue between Indra and Agni.
xx. Rv. X.135; Dialogue between Yama and A Boy. [17]

इनमें प्रेम, हठ, व्यंग्य, भक्ति, विश्वास आदि मानवीय भावनाओं से सम्बद्ध लौकिक सामग्री का प्राचुर्य है ।

इनमें तत्कालीन समाज व्यवस्था तथा नाटकीय मनोविनोद की सूचनाएँ मिलती हैं । इनका सम्बन्ध तत्कालीन कथाओं या वास्तविक घटनाओं से था।

संवाद सूक्तों के स्वरुप के विषय में तीन सिद्धांत उद्धृत किये गये हैं -

अ) आख्यानात्मक - ओल्डेनबर्ग का मत।

ब) नाटकांश रूप - मैक्समूलर, लेबी, हर्टल, और श्रोदर।

स) लोकगीतात्मक - विंटरनित्ज़ का मत।

घ) प्रमुख ऋग्वैदिक संवाद -सूक्तों में पर्यावरण विषयक संचेतना।

वेदों में पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण निराकरण और पर्यावरण के प्रति चेतना का वर्णन मिलता है, जो इस बात को सत्यापित करता है कि वैदिक काल में भी पर्यावरण के प्रति चेतना थी, जिसे आज के सन्दर्भ में धारण करने में सृष्टि और मानव कल्याण निहित है।

पर्यावरण चेतना:- पर्यावरण के प्रति सचेत होना, पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित कार्यक्रमों में सक्रिय रहना ही पर्यावरण चेतना है।

वेद में प्राकृतिक तत्त्वों के प्रति अन्तरङ्ग आत्मीयता को प्रकट करके उनके संरक्षण व संवर्धनार्थ मानव को आकर्षित करते हैं। जैसे -

सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोऽन्तरिक्षमात्या पृथ्वी शरीरम्।
अस्तृतो नामाहमयस्मि स आत्मानं निदधैद्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय।। [18]

अर्थात् मेरी आँखें सूर्यवत् प्रकाशमान, प्राण वायु समान गतिमान, आत्मा अंतरिक्ष समान मध्यवर्ती और शरीर पृथिवी तुल्य सहनशील है, ऐसा मैं बिना आवरण प्रसिद्ध हूँ,अपनी आत्मा सूर्य और पृथिवी रक्षार्थ अर्पित करता हूँ।

भूमि संरक्षण

"माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्याः।" [19]
ऋषियों द्वारा भूमिरुपी माता की रक्षा के अंतर्भाव को प्रकट किया गया है।

जल संरक्षण

इस धरा पर प्रकृति की देन जल, सुखदायक, जीवनाधार, रक्षक, अमृत, भेषज, रोगनाशक और आयुवर्धक है। अथर्ववेद के मंत्र में हिमालय से निकलने वाली नदियों के जल को विशेष लाभकारी बताया गया है, उनका हृदय रोग में विशेष लाभ है।

आपो अस्मान्मातरः शून्धयन्तु घृतेन नो घृतष्वः पुनन्तु। [20]

जल हमारी माताएँ हैं, वे हमें घृतसमान जल से बलयुक्त और पवित्र करें, ऐसे सभी जल जो कहीं भी स्थित हैं, रक्षणीय हैं।
विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त में विश्वामित्र कहते हैं "अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म"। [21]
मातृ-तुल्य सिंधु नदी के पास उपस्थित हुआ हूँ, परम सौभाग्यवती विपाशा के पास उपस्थित हुआ हूँ।
विश्वामित्र नदियो को माता कहकर सम्बोधित करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक युग में पर्यावरण के साथ मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध था। यही नदियाँ जिनको जड़ समझा जाता है, चेतन प्राणियों की क्षुधा शांत करती हैं, जीवनरेखा हैं।

ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमाना शिवादेवीरशिषदा
भवन्तु सर्वा नद्यो अशीमिदा भवन्तु। [22]

समस्त नदियाँ हमारे लिए जल से सींचती हुई, आनन्द व सुखदानी अन्नादि से, वनस्पति से प्रेम करने वाली हो।

वर्षा का जल

वर्षा के जल में पोषक तत्त्व पाए जाते हैं –

अपामहं दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम्।
अपामहं प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः।। [23]

हे मनुष्यों ! आकाश में बसने वाले स्रोतों से निकलने वाले, फैले हुए जालों में पोषण-शक्ति होती है, यह तुम निश्चय से जानों, अतः इनसे वेगवान और बलवान पुरुष बन जाओ।

पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में पुरूरवा मेघ का ही नाम है, क्यूँकि पृथ्वी से उठी हुई वाष्प ही मेघ को उत्पन्न करती है और मेघ ही बहुत गर्जना करता है। उर्वशी - अश् व्याप्तौ से व्याप्त होने के कारण 'विद्युत' ही है। [24]
ऋग्वेद [25] में कहा है कि जब वह पुरूरवा (मेघ) उत्पन्न हुआ तब 'गनाः' अर्थात् 'आपः' (जल) उसके पास था।
निरुक्त [26] में 'गनाः' का अर्थ 'गमनाद् आपः' किया है। शतपथ ब्राह्मण में - 'पुरूरवा और उर्वशी से आयु उत्पन्न हुआ'। उसी ब्राह्मण 27 में "आयु" को अन्न कहा है- अन्नम् उ वा आयुः।
इस आख्यान का अभिप्राय है कि वर्षा ऋतु में मेघ और विद्युत का समागम होता है। वर्षा में मेघ और विद्युत के समागम को पुरूरवा और उर्वशी का विवाह बताया गया है। वर्षा ऋतु के बाद विद्युत लुप्त हो जाती है। यही पुरूरवा और उर्वशी का वियोग है। इसको कथानक का रूप दिया है। [28]

वृक्ष वनस्पति संरक्षण

मत्स्य पुराण में कहा गया है - "दशपुत्र समो द्रुमः"
अर्थात् एक वृक्ष जनहित की दृष्टि से दस पुत्रों के बराबर है। वृक्ष संसार की रक्षा करते हैं और प्राणवायु (ऑक्सीजन) रुपी दूध पिलाते हैं।
वैदिक ऋषियों ने समस्त वृक्षों और वनस्पति से मानव -आकांक्षाओं को जोड़ते हुए इनको सुरक्षा प्रदान की है।
यम -यमी संवाद सूक्त में भाई -बहन के अनैतिक सम्बन्ध को पाप घोषित किया है।

"पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।" [29]

तथा यम कहता है कि, हे यमी! तुम अन्य पुरुष का ही भली भाँती आलिङ्गन करो। जैसे लता वृक्ष का वेष्टन करती है।

"त्वं यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजाते लीबुजेव वृक्षम्।" [30]
यहाँ पर वृक्ष एवं लता से उपमा देकर ऋषि पर्यावरण का ही गुण गान करते हैं।

- भारतीय संस्कृति में इनके प्रति आज भी आदरभाव है, यही कारण है आज भी स्त्रियों द्वारा विभिन्न व्रत-त्यौहारों पर पीपल,तुलसी, नीम, वट, आम्र, कदलीवृक्ष इत्यादि की पूजा किया जाना इनके प्रति आत्मीयता सम्मान और संरक्षण की भावना को परिलक्षित करता है।

वनरक्षकों को नमस्कार करते हुए यजुर्वेद में कुत्स ऋषि कहते हैं -

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो वनानां पतये नमः।
वृक्षाणां पतये नमः औषधीनां पतये नमः।
वृक्षाणां पतये नमः अरण्यानां पतये नमः। [31]

अर्थात् जिनमें सूर्य की हरणशील किरणें समाहित होती हैं, ऐसे महावृक्षों को नमस्कार ! वनपालकों, रक्षकों, वृक्षों और औषधियों की रक्षा करने वालों व वनरक्षकों को नमस्कार। इन्हें दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को दूर करने वाला बताया है।

निष्कर्ष:

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए वेद में मानव को पर्यावरण के प्रति सजग रहने तथा उसके ज्ञान हेतु पुनः-२ आदेश दिया गया है। -

पूषा विष्णुर्हवनं सरस्वत्यवन्तु सप्त सिन्धवः।
आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम्।। [32]

अर्थात् सब का पोषक सूर्य, सर्वत्र व्यापक वायु, सप्तस्थलों पर उपलब्ध नदी आदि का जल, व्यापक अंतरिक्ष, बादल, वनस्पति और पृथिवी सब मेरी पुकार सुनें।
हम मानव इनके गुणों को जाने तथा इनसे यथोचित उपकार ग्रहण करें। कृतज्ञ बनें कृतघ्न नहीं।

सन्दर्भ सूची:

1. सत्तायां विद्यते ज्ञाने वेत्ति विन्ते विचारणे। विन्दते विन्दति प्राप्तौ श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्।। सिध्दान्तकौमुदी, चुरादिगण
2. विदन्ति-जानन्ति, विद्यते-भवन्ति, विन्ते विचारयति, विन्दन्ते-लभन्ते सर्वे मनुष्याः सत्विद्यां यैर्येषु वा तथा विद्वान्सश्च भवन्ति, ते वेदाः। ऋग्वेदभाष्यभूमिका
3. मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्। आपस्तम्ब परिभाषा, ३१
4. पुरुषविद्यानित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे। निरुक्त १.२
5. वेदोऽखिलो धर्ममूलम्.। मनुस्मृति २/६
6. इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः। तैत्तिरीय संहिता भाष्यभूमिका, सायण
7. ब्राह्मणेन निष्कारणों धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च। महाभाष्य पस्पशाह्निक-1, पतञ्जलि
8. तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दान्सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।। ऋग्वेद १०/९०/९
9. तत्रादौ ब्रह्म-परम्परया प्राप्तं वेद वेदव्यासो मन्दमतीन् मनुष्यान् विचिन्त्य तत्कृपया चतुर्धा व्यस्य ऋग्यजुः-सामथर्वाख्याश्चतुरो वेदान् पैल-वैशम्पायन-जैमिनि-सुमन्तुभ्यः क्रमादुपदिदेश। यजुर्वेदभाष्य, वेददीप
10. विव्यास वेदान् यस्मात्स वेद व्यास इति स्मृतः। महाभारत, आदिपर्व
11. एकविंशतिधा बाहवृच्यम्। महाभाष्य पस्पशाह्निक
12. ऋचां दश सहस्राणि ऋचां पञ्चशतानि च। ऋचामशीतिः पादश्च पारणं सम्प्रकीर्तीतम्।। अनुवाकानुक्रमणी, ४३
13. ऋक्सूक्तनिकरः, भूमिका पृ॰ ४५ -७७
14. तास्त्रिविधा ऋचः परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृता आध्यात्मिक्यश्च। निरुक्त ७/१
15. संस्कृत साहित्य का इतिहास; डा. उमाशंकर शर्मा ऋषि, पृ॰ ४१
16. वैदिक साहित्य का इतिहास; डा. पारसनाथ द्विवेदी, पृ॰ ५४
17. The Dialogue Hymns Of The Rigveda:A Critical Study, University of Guwahati,1995.
18. अथर्व ५/९/७
19. अथर्व १२/१/१२
20. ऋग्वेद १०/१७/१०
21. ऋग्वेद ३/३३/३
22. ऋग्वेद ७/५०/४
23. अथर्ववेद १९/२/४
24. वैद्य रामगोपाल शास्त्री, वैदिक आख्यान का यथार्थ स्वरुप, पृष्ट -२,
25. ऋग्वेद (१०/९५/७)
26. निरुक्त (१०/४६)
27. शतपथ ब्राह्मण (१/२/३/१६)
28. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, वैदिक देवों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप, पृष्ठ ८७
29. ऋग्वेद (१०/१०/१२)
30. ऋग्वेद (१०/१०/१४)
31. यजुर्वेद (१६/१७-२०)
32. ऋग्वेद (८/५४/४)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सायण भाष्य, ऋग्वेदसंहिता (4 Vols.), राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थान, नव देहली, २००६
2. वैद्य रामगोपाल शास्त्री; वैदिक आख्यानों का यथार्थ स्वरुप, ओमप्रकाश सुनेजा,मंत्री आर्य समाज करोल बाग, दिल्ली १९७२
3. डॉ. उमा रानी, "वेद विहित पर्यावरण-संरक्षणाभिधायी विवेचना", वेदविद्या, अंक-२६, ISSN-2230-8962.
4. संध्या जैन, "वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना पर एक अध्ययन", International Journal of Research Granthaalayah, ISSN: 2350-0530 (O)
5. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, वैदिक देवों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, उ.प्र., २००७